प्राथमिक पूजा पद्धति

श्रीविग्रह सेवा-पूजा और आरती का विषय अत्यंत व्यापक है। यहाँ पर इसका वर्णन संक्षेप में किया गया है। श्रील प्रभुपाद ने सबसे पहले **स्वच्छता और नियमितता**, इन दो विषयों, पर जोर दिया है। भगवान् को निद्रा से जगाने से पहले निम्नलिखित सभी कार्यकलापों का निष्पादन करना चाहिए।

प्रातःकृत्य

सूर्योदय के डेढ़ घंटा पहले के प्रातःकाल को ब्रह्ममुहूर्त कहा जाता है। इसी ब्रह्ममुहूर्त में पारमार्थिक कार्यकलाप करने का निर्देश दिया गया है। प्रातःकाल में किए गए आध्यात्मिक कार्यकलाप का फल दिन के अन्य किसी समय में किए गए कार्यकलाप के फल से बहुत ज्यादा होता है। इसलिए ब्रह्ममुहूर्त में श्रीगुरूदेव का स्मरण कर हरे कृष्ण महामंत्र का उच्चारण करते हुए उठना चाहिए।

(यद्यपि निद्रा उचित स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, तथापि इसके तामसिक प्रभाव से देह और मन अशुद्ध हो जाता है। इसलिए, उस प्रभाव को नष्ट करने के उद्देश्य से एवं स्वस्थ एवं विधिवत जीवनयापन करने के लिए प्रातःकाल उठकर देह तथा मन को शुद्ध करना आवश्यक है।)

सवेरे उठकर मलमूत्र त्याग, दांत की सफाई, स्नान, साफ वस्त्र धारण, शरीर के द्वादश अंगो पर तिलक धारण,

स्नान के समय मंत्र का उच्चारण करें।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू।।

तदोपरान्त नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

स्नान के बाद पवित्र वस्त्र धारण करें, उसके बाद पवित्र आसन पर बैठकर आचमन करें, तथा तिलक करें।

तिलक लगाने की विधि

श्रील प्रभुपाद श्रीमद्भागवतम् के एक तात्पर्य में तिलक का गुणगान करते हुए लिखते है-

"कलियुग में सोना-चाँदी इत्यादि आभूषण प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है किन्तु शरीर के बारह स्थानों पर तिलक मंगलमय आभूषण है और शरीर को शुद्ध करने के लिए पर्याप्त है।"

तिलक से सुशोभित शरीर को भगवान् श्रीविष्णु का मंदिर माना जाता है।

ललाटे केशंव ध्यायेन, नारायणं अथोदरे।
वक्षःस्थले माधवं तु, गोविन्दं कण्ठकूपके॥
विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ, बाहु च मधुसूदनम्।
त्रिविक्रमं कन्धरे तु, वामनं वाम पाश्वके॥
श्रीधरं वामबाहौ तु, हृषीकेशं तु कन्धरे।
पृष्ठे च पद्मनाभं च, कट्यामं दामोदरं न्यसेत्॥

हाथ के शेष तिलक को ॐ वासुदेवाय नमः मंत्र उच्चारण करके मस्तक के शिखर पर लेपन करें। तत्पश्चात् मन्दिर का मार्जन अथवा परिष्कार करें तथा मंगल आरती में सम्मिलित हो जाएं।

मस्तक पर ———— ॐ केशवाय नमः
नाभी के पास ———— ॐ नारायण नमः
छाती पर ———— ॐ माधवाय नमः
कंठ पर ———— ॐ गोविन्दाय नमः
पेट पर (दाहिनी ओर) ———— ॐ विष्णवे नमः
दाहिने हाथ की बाँह पर ———— ॐ मधुसूदनाय नमः
दाहिने हाथ के कंधे के पास — ॐ त्रिविक्रमाय नमः
पेट पर (बायीं ओर) ———— ॐ वामनाय नमः
बायें हाथ की बाँह पर ———— ॐ श्रीधराय नमः
बायें हाथ के कंधे के पास — ॐ ऋषिकेशाय नमः
पीठ पर सिर के पास ———— ॐ पद्मनाभाय नमः
कमर पर ———— ॐ दामोदराय नमः

आचमन पद्धति

पूजा/आरती करने के पूर्व स्वयं को शुद्ध करने के लिए आचमन किया जाता है। आचमन के लिए पानी आचमन पात्र में रखा जाता है।

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः।

इन तीन मंत्रों से तीन बार आचमन करें। प्रत्येक बार हाथ धोएं

1. आसन पर खड़े रहकर आचमन पात्र का पानी चम्मच द्वारा दायें हाथ की हथेली पर तीन बार डालें। ॐ केश्वाय नमः का उच्चारण करके हथेली का थोड़ा जल हथेली के मूल भाग की ओर से प्राशन करें, तत्पश्चात् और एक बूंद जल लेकर हथेली पर से नीचे छोड़ दें।

2. इस विधि को और दो बार करें। दूसरी बार ॐ नारायणाय नमः तथा तीसरी बार ॐ माधवाय नमः मंत्र का उच्चारण करें।

3. अंत में हथेली पर तीन बूँद पानी लेकर ॐ गोविन्दाय नमः मंत्र का उच्चारण करते हुए पानी नीचे छोड़ दें।

श्री गुरूदेव एवं श्रीविग्रह का जागरण

बाएँ हाथ से घंटी बजाते हुए श्री गुरूदेव के चित्रपट में उनका चरण स्पर्श कर,

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीगुरो त्यज निद्रां कृपामय।

''हे कृपामय गुरूदेव, कृपापूर्वक निद्रा त्यागकर उठिये''।

मंत्र का उच्चारण करें (मन में यह सोचना है कि गुरूदेव शय्या से उठकर सिंहासन (वेदी पर) बैठ गये हैं)। इसके बाद गुरूदेव की अनुमति लेकर ठीक इसी तरह गुरू-परंपरा सहित अन्य विग्रहों से शय्या त्याग करने का अनुरोध करें।

तत्पश्चात् श्रीजगन्नाथ देव, श्रीबलदेव तथा श्रीमती सुभद्रा देवी की शय्या के निकट जाकर एक-एक करके उनके श्रीचरण स्पर्श करके निम्नलिखित मंत्रोच्चारण करें।

त्यज निद्रां जगन्नाथ श्रीबलदेवोत्तिष्ठ च।
जगन्मातश्च सुभद्रे उत्तिष्ठोतिष्ठ शुभदे।।

''हे जगन्नाथ देव, हे बलदेव! कृपापूर्वक आप निद्रा त्याग करके उठिये। हे श्रीमती सुभद्रा, सर्वजनों की प्रिय माता, अनुग्रहपूर्वक उठकर हम लोगों पर कृपा की वर्षा कीजिये।

उन्हें मीठे भोग निवेदन करें, आरती निवेदन करें। आरती से पहले श्री गुरूदेव सहित अन्य विग्रहों के चरण में पुष्प अर्पित करें।

पुष्प शुद्धि मंत्र

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे
पुष्पचयावकीर्णे च हुं फट् स्वाहा।

भोग ग्रहण करने हेतु श्रीभगवान् को आमंत्रण

1) घंटी बजाकर श्री विग्रहों को मर्यादापूर्वक एक-एक कर प्रत्येक के श्री चरणों में पुष्प अर्पण करके ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है एवं इसके बाद भोग-नैवेद्य के खाद्य-पदार्थ ग्रहण करने के लिए उनसे प्रार्थना करें।

(आवश्यकता अनुसार पुष्प के बदले पंचपात्र से जल अर्पण करने से भी होगा, या फिर सिर्फ मानस रूप से पुष्प अर्पण करने से भी चलेगा।)

2) श्रीविग्रहों को **आचमन निवेदन करें।**

इदं आचमनीयम् ॐ जगन्नाथ बलदेव सुभद्रायैभ्य नमः (3 बार)
इदं पुनराचमनीयं ॐ जगन्नाथ बलदेव सुभद्रायैभ्य नमः (3 बार)

भोग अर्पण :

1) भोगपात्रों की ओर संकेत कर प्रत्येक श्री विग्रह से निवेदित भोग एवं जल को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करें।

2) घंटी बजाते हुए श्री गुरूदेव का प्रणाम मंत्र तीन बार उच्चारण करके श्री विग्रहों की सेवा हेतु अनुमति मांगे।

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते गोपाल कृष्ण गोस्वामिन् इति नामिने।।
प्रभुपादस्य साहित्यं यः प्रकाश्य वितीर्य च।
प्रचारं कृतवान् साधू भगवतपादाय ते नमः।।

3) श्रील प्रभुपाद के निम्नलिखित प्रणाम मंत्र को तीन बार उच्चारण कर, उनसे कृपा की याचना करें।

नम ॐ विष्णुपादाय कृष्णप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिवेदांत स्वामिन् इति नामिने।।
नमस्ते सारस्वते देवे गौरवाणी प्रचारिणे।
निर्विशेष शून्यवादि पाश्चात्यदेश तारिणे।।

4) श्री चैतन्य महाप्रभु के निम्नलिखित प्रणाम मंत्र को तीन बार उच्चारण कर, उनसे कृपा की याचना करें।

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदाय ते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः।।

5) श्रीकृष्ण के निम्नलिखित प्रणाम मंत्र को तीन बार उच्चारण कर अभिवादन करें।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

6) श्रीविग्रह कक्ष से बाहर आकर हरे कृष्ण महामंत्र का जप करें।

भगवान् के पार्षदों को प्रसाद निवेदन

1) श्री भगवान् के प्रसाद को श्री भगवान् के पार्षदवर्ग एवं श्री गुरूदेव अर्पित करें एवं अर्पण करते समय बोंलें:

हे श्री गुरू महाराज! कृपापूर्वक यह महाप्रसाद ग्रहण कीजिए।

हे श्री भगवान् के पार्षदवृंद! आप लोग भी कृपापूर्वक यह महाप्रसाद ग्रहण कीजिए।

2) अंत में पात्रों को हटाकर उस जगह को साफ कर दें।

आरती पात्र एवं पद्धति

1) एक थाली में विषम संख्या में अगरबत्ती, घी के पञ्च प्रदीप, पञ्चपात्र, शंख, छोटा जलशंख, जलशंख रखने के लिए पात्र, घंटी, जल से भरा छोटा कलश, कपड़ा / रूमाल, फूल से भरा छोटा पात्र, चामर एवं मयूर पंख सजाकर पवित्र जल द्वारा शुद्धिकरण करें।

आरती से पहले तथा बाद में श्री विग्रह कक्ष के बाहर, शंख को जल से धोकर तीन बार बजाएँ एवं पुनः धोकर रख दें।

2) घंटी बजाकर श्रीविग्रह के कक्ष का द्वार या पर्दा खोलकर बाईं ओर खड़े होकर आरती करें। इस समय अन्य लोग कीर्तन करेंगे। यदि कोई उपस्थित न हो, तो पुजारी आरती के साथ-साथ कीर्तन कर सकता है।

3) आरती करने से पहले और बाद में हाथ धोकर प्रत्येक वस्तु उठाएँ एवं

आरती के समय प्रत्येक द्रव्य को पवित्र करके आरती करें।

4) किसी वस्तु के निवेदन के बाद उसे पुनः थाली में न रखें।

5) आरती करते समय घंटी कमर से ऊपर रखकर बजाएँ।

6) आरती समाप्त होने के बाद शंख बजाने के बाद भगवान् से अपराध क्षमा हेतु प्रार्थना करें एवं (विसर्जन पात्र (निर्माल्य पात्र) में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में रखें) शंख के जल को समवेत भक्तों के मस्तक पर छिड़क दें।

आरती करने की पद्धति :

वस्तु	पादपद्म	नाभि	मुखमंडल	सर्वांग
अगरबत्ती				7 बार
प्रदीप	4 बार	2 बार	3 बार	7 बार
जलशंख			शिरोदेश पर 4 बार	7 बार
वस्त्र / रुमाल				7 बार
पुष्प				7 बार
चामर	समय के अनुसार सुन्दर तरीके से हिलाएँ			
मयूर पंख	शीतकाल को छोड़कर अन्य सभी समय समयानुसार हिलाएँ			

(अगरबत्ती, जलशंख, वस्त्र, पुष्प आदि को समयानुसार कम संख्या में घुमाने से भी चलेगा।)

8) साफ कपड़े से मंदिर के फर्श को पोंछ दें एवं आरती की सामग्री को एकत्र कर धोलें।

अपराध क्षमापण मंत्र

ॐ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व मधुसुदन।

रात्रि में श्रीविग्रहों के शयन की पद्धति

1) सर्वप्रथम श्री गुरूदेव को दण्डवत प्रणाम करने के बाद आचमन करें।

2) श्री विग्रहों के पोशाक बदलकर रात्रि पोशाक पहनाएँ या कम-से-कम उनके अंगों से अलंकारों एवं पुष्प मालाओं को हटा दें।

3) श्री विग्रहों के शय्याओं को सुव्यवस्थित करके हाथ-जोड़कर उन्हें शयन के लिए आमंत्रित करें।

श्रीश्रीजगन्नाथ, बलदेव, सुभद्रा

आगच्छ शयन-स्थानं अग्रजेन हे अघोक्षज।
आगच्छ निज शय्यां च सुभद्रे मे दयां कुरु।।

श्रीश्रीराधाकृष्ण-

आगच्छ शयन-स्थानं प्रियाभिः सह केशव।
दिव्य पुष्पाढ्य शय्यायां सुखं विहर माधव।

4) अंत में दण्डवत प्रणाम करके रोशनी बंद कर

Extra

इदं आचमनीयम् ऐं गुरवे नमः

इदं आचमनीयम् ॐ कृष्णाय नमः

इदं आचमनीयम् ॐ बलरामाय नमः

इदं आचमनीयम् श्रीं सुभद्रायै नमः

इदं आचमनीयम् ॐ सुदर्शनाय नमः

इदं प्रनर् आचमनीयं